समरसता से ही राष्ट्ररक्षा

समरसता सेतु

संपादक : देवजीभाई जे. रावत

वर्ष - १ अंक - २ डिसेम्बर - २०११ वार्षिक लवाजम रू-१०० छुटक नकल रू १०/-

संपादक : देवजीभाई जे. रावत
संरक्षक : मा. श्री अशोक सिंहल अं.रा.अध्यक्ष वि.हि.प.
मा. श्री डॉ. प्रविणभाई तोगडीया अं.रा.महामंत्री वि.हि.प.
मा.श्री मधुभाई कुलकर्णी अ.भा.कार्य कारणी सदस्य RSS
मा. श्री ईन्द्रेशकुमार अ.भा. कार्य कारणी सदस्य RSS
मा. श्री के.वी. मदनन अ.भा. उपाध्यक्ष वि.हि.प. (केरल)
मा. श्री रामनाथ कोविंद प्रवकता भा.ज.पा. ऍड. सुप्रिमकोर्ट
मा. श्री डॉ. रामनरेश कथेरीया सांसद - आग्रा
मा. श्री डॉ. विजय सोनकर शास्त्री - अध्यक्ष सा.स.अभियान
मा. श्री राजेन्द्र शर्मा - प्रांत अध्यक्ष, विहिप, मध्य भारत,'स्वदेश'
मा. श्री अमरीशभाई पटेल C.A.
मा. श्री प्रो. राजेशभाई शास्त्री
मा. श्री डॉ. पी. जी. ज्योतिकर
मा. श्री मोहन जोशी - केन्द्रीय मंत्री - विहिप
प.पू. महंतश्री शंभुनाथ महाराज-सवगुण मंदिर झांझरका, गुज.
प.पू. पुरषोत्तमचरणदासजी महाराज श्री स्वा.गुरुकुल,झुंडाल,गुज.
श्री अशोकभाई रावल RSS - अमदावाद
प्रांतः परामर्शदाता : दिल्ली - श्री आर. सी. वर्मा - ऍडवोकेट - दिल्ली
हरियाणा - श्री अमित व्यास
राजस्थान - श्री प्रहलाद अटवाल - जयपुर
श्री गोपाल कोटिया - उदयपुर
गुजरात - श्री भास्कर मकवाणा - सुरेन्द्रनगर
श्री तुलसीभाई काकडीया - सुरत
महाराष्ट्र - श्री किशोर डवले - नागपुर
श्री पी. जे. वनजारी - नागपुर
गोवा - श्रीमती डॉ. अनिता बहन
केरल - श्री के. टी. मुरलीधरन
उत्तर प्रदेश - श्री शिवदाससिंग - काशी
श्री डॉ. ओमप्रकाश श्रीवास्तव - गोरखपुर
श्री लल्लनसिंग - काशी
बिहार - श्री अनंत झा - मुझफरपुर
श्री कामेश्वर चौपाल - पटना
ओरिस्सा - श्री दिपककुमार महंतो - कटक
झारखंड - श्री सुरेश मल्लीक - रांची
आंन्ध्रप्रदेश - श्री कन्ना भाष्कर - विजयवाडा
हिन्दी परमर्शदाता : श्री कृष्णपालसिंह भदौरिया
व्यवस्था : श्री जयश्रीबहन त्रिवेदी

संपर्क - पत्र व्यवहार
धर्मादा हॉस्पिटल, गांधी आश्रम के पास, अमदावाद - ३८० ०२७. गुजरात.
संपर्क : ०७९-२७५५९९८९ मो. ०९९२५२०३५३१
E-mail : samrastasetu2010@gmail.com

'समरसता सेतु' मासिक पत्रिका का दिपावली के पावन पर्व पर प्रथम अंक विमोचन कार्यक्रम मा.सरकार्यवाहक श्री भैयाजी जोशी एवम आ.रां. महामंत्री श्री डॉ.प्रविणभाई तोगडीया के कर कमलो से सप्पन हुआ ।

तस्वीरमें प.पू.श्री डॉ.गौरांगशरणचार्यजी, श्री देवजीभाई रावत, प.पू.महंत श्री नानकदासजी महाराज, मा. सकार्यवाहक भैयाजी जोशी, मा. प्रविणभाई तोगडीयाजी, मा.श्री.दिनेशचंद्रजी, प.पू.महंतश्री अखिलेशदासजी महाराज, प.पू.श्री कालीदासजी महाराज 'समरसता सेतु' प्रकाशन विमोचन समारोह में.

विश्व हिंदू परिषद के आयाम धर्मप्रसार विभाग के त्रीदिवसीय अखिल भारतीय कार्यकर्ता संमेलन में 'समरसता सेतु' मासिक पत्रिका अंक का विमोचन कार्यक्रम दिनांक ७ -१०-२०११ गुजरात के प्रसिध्ध मंदिर निष्कलंकी नारायण-पिराणा स्थान में मा.श्री. भैयाजी जोषी सहकार्यवाह एवम मा.श्री.डॉ.प्रविणभाई तोगडीया आ.रां.महामंत्री वि.हि.प. तथा मा.श्री. दिनेशचंद्रजी आ.रा.महामंत्री संगठन वि.हि.प और प.पू.महातश्री नानकादसजी महाराज अनेक पू.संतो एवंम सेंकडो कार्यकर्ताओं की परिस्थितिमें संपन्न हुआ ।

हिंदू समाजमें व्याप्त ऐसा अस्पृश्यता का कलंक बिना संघर्ष नष्ट करके शक्तिशाली-स्वाभिमानयुक्त समरस हिंदु समाज के निर्माण हेतु यह पत्रिका प्रतिमास प्रकाशन के द्वारा जनजागरण शुभारंभ हुआ है सभी महानुभ की शुभेच्छा आशीर्वाद से यह निरंतर अपने कार्य में आगे बढेगा ऐसा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था ।

सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिए अगर राजनीतिक दल थोड़ा जोखिम उठाएं तो एक बड़े सामाजिक बदलाव की उम्मीद की जा सकती है ।

तमिलनाडु में मदुरै जिले के उत्थपुराम गांव में दलित समुदाय के लोगों को वहां के एक मंदिर में प्रवेश के लिए लंबी लड़ाइ लड़नी पडी। यह घटना केवल इसलिए मायने नहीं रखती क्योंकि समाज का एक तबका अपने न्यूनतम धार्मिक हक से वंचित था और आखिरकार उसे उसका अधिकार मिल गया। बल्कि यह किसी भी समाज के लिए खुद में एक विचलित करने वाली बात होनी चाहिए कि जिन धार्मिक मान्यताओं की बुनियाद पर वे सामूहिक जीवन जीते हैं, उसमें एक बड़े हिस्से को इससे बाहर रखने के लिए छूआछूत जैसे बेमानी पूर्वग्रहों का सहारा लिया जाता है। हमारे संविधान ने छूआछूत को निषिद्ध ठहराया है। लेकिन संविधान लागू होने के छह दशक बाद भी मदुरै के इस मंदिर में दलितों का प्रवेश सहजता से नहीं हो सका। सात दशक की जद्दोजहद के बाद बल की मौजूदगी में उत्थपुरम के दलितों ने जब मंदिर में वहां आसपास की गलियों में ऊंची कही जाने वाली जातियों की महिलाएं जोर-जोर से रोकर विरोध जता रही थीं। इससे पहले भी दलित समुदाय के लोगों ने पूजा-अर्चना के लिए कई बार इस मंदिर में जाने की कोशिश की थी। लेकिन वहां की दबंग जातियों के हिंसक विरोध के चलते वे सफल नहीं हो सके थे।

यह सही है कि एक समझौते के बाद उत्थपुरम में दलितों का मंदिर प्रवेश फिलहार केवल प्रतीकात्मक है, लेकिन सदियों से कायम जड़ मान्यताओं को एकबारभी दूर नहीं किया जा सकता। गौरतलब है कि उत्थपुरम गांव में ऊंची जातियों की बस्ती के छोर पर एक 'अछूत दीवार' खड़ी कर दी गई थी, ताकि दलितों के घरों के बाकी गांव से हर तरह से अलग किया जा सके। तमिलनाडु छुआछूत उन्मूलन मोर्चा और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में लंबी लड़ाई के बाद ही 2008 में वह दीवार गिराई जा सकी। माकपा की यह भूमिका इसलिए महत्त्व रखती है क्योंकि जातिगत भेदभाव और दूसरी सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिए अगर राजनीतिक दल थोड़ा जोखिम उठाएं तो एक बड़े सामाजिक बदलाव की उम्मीद की जा सकती है।

विचित्र है कि मंदिर में प्रवेश के लिए दलितों को एक ऐसे राज्य में भी संघर्ष करना पड़ रहा है, जो सामाजिक क्रांति के ऐतिहासिक प्रयोगों के लिए जाना जाता है और जिसने बड़े समाज सुधारक पैदा किए है। इसलिए मदुरै का यह वाकया द्रविड़ आंदोलन की सीमाओं या उसके पराभव ...ता है। राच्य की राजनीति में अब निजी हित ही सर्वोपरि ...माजिक विषमता के सवालों पर भी द्रविड़ पार्टियां चुप्पी साधे रहती है। सार्वजनिक स्थानों पर छुआछूत प्रयास का निषेध संविधान बनते ही लागू कर दिया गया था। इसके अलावा, पिछले इक्कीस सालों से अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण कानून भी लागू है। इसके बावजूत उत्थपुरम के मंदिर में दलितों के जाने की मनाई को प्रशासन मूक होकर देखता रहा। कुछ समय पहले अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष पीएल पुनिया के ओड़िशा के एक मंदिर में प्रवेश को लेकर विवाद हो गया था। जब ऊंचे ओहदे पर बैठे व्यक्ति के साथ ऐसा हो सकता है तो फिर बाकी दलितों के साथ कैसा वर्ताव होता होगा। जाहिर है, आधुनिकता और प्रगति के तमाम दावों के बावजूद अभी समाज सुधार के बड़े प्रयत्नों की दरकार है।

जागो हिन्दुस्तानी

धर्मयोद्धा वाल्मीकि परिवार के प्रशंसनीय प्रयास के बावजूद पेशावर का गुरु गोरखनाथ मंदिर पुनः पाक-प्रांतीय पुरातत्व विभाग के कब्जे में

कलियुग में गुजरात के ही काठियावाड़ में-जिसका नाम गोरख मणि है।

इस्लामाबाद-रिडिफमेल डॉट कॉम, 31 अक्टूबर-1 नवम्बर, 2011 के अनुसार मंदिर पर कब्जे के लिए कानूनी लड़ाई लड़ने वाली श्रीमती फूलवती के अधिवक्ता परवेज इकबाल ने बताया कि सरकार ने सिर्फ दीवाली मनाने के लिए ही मंदिर की चाबी हिंदुओं को दी थी। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं को यह जानकर काफी आघात लगा कि उन्हें दीवाली पूजा के बाद मंदिर की चाबी सरकार को वापस करनी पड़ी। अब फिर से इस मंदिर पर प्रान्तीय पुरातत्त्व विभाग का कब्जा हो गया और अब वही इसकी देखरेख करेगा।

स्मरण रहे कि मंदिर छोटा है और इसके आसपास दो तरफ दस कमरे बने हुए हैं। सफेद संग के इस मंदिर में तीन गुम्बद हैं और भगवान की मूर्तियों के लिए दो कमरें भी बने हुए हैं। मंदिर पर लाल, काले और पीले रंग की पताकाएं तथा ध्वज भी फहराये गये। पेशावर हिन्दू वाल्मीकि सभा के नेता रामलला ने बताया कि खैबर पखतुंखवा प्रान्त की राजाधानी में रहने वाले अधिकतर हिन्दू वाल्मीकि समुदाय के हैं और उनके लिए सिर्फ तीन ही मंदिर हैं। इनमें से भी दो मंदिर बंद पड़े हैं।

रॉयल आर्टिलरी बाजार स्थित एक मंदिर हेतु सिख तथा हिन्दू समुदाय के लोग बहुत समय से कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे। वहां इस समय सिर्फ काली बाड़ी मंदिर ही हिन्दुओं के लिए पूजा हेतु खुला हुआ है। अपनी पुस्तक ''पेशावरः अतीत और वर्तमान'' में मशहूर इतिहासकार एस.एस.जाफर लिखते हैं कि गोर खत्री मंदिर कभी बहुत मशहूर हिन्दू मंदिर हुआ करता था, जहां हिन्दू बड़ी संख्या में तीर्थयात्रा हेतु जाते थे और खासतौर से ''सरदुकहर'' यानि सिर के बाल उतरवाने की रस्म पूरी करते थे। देश के बंटवारे के समय जो भवन हिन्दुओं द्वारा वहां छोड़ दिये गये थे उन पर औकाफ विभाग ने कब्जा कर लिया था और बाद में उसने उन्हें लीज पर दिया। नौशेरा की पूर्व पार्षद लाजवंती ने कहा कि, ''हमारे मकान वापस मिलने चाहिए और हमें न केवल शरण बल्कि धार्मिक आजादी भी मिलनी चाहिए।''

(साभार : हिन्दू विश्व)

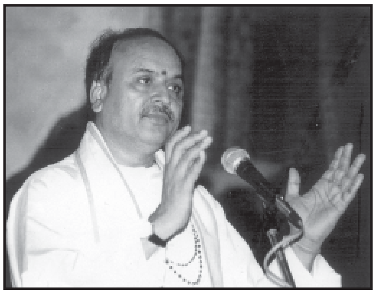

हम सभी के पूर्वज एक ही है । हम सभी के आत्मा परमात्मा का ही अंश है, फिर यह भेदभाव क्यों ?

– डॉ. प्रविणभाई तोगडिया

(सामाजिक समरसता प्रदेश बेठक गुजरात में प्रवचन के अंश)

अनुवादक : सोलंकी महेन्द्रभाई M.A., B.Ed.

हम सभी हिन्दू है । अर्थात हिन्दू जीवन जीते है । हिन्दू पद्धतियों का आचरण करते है । हिन्दू के श्रद्धा के अनुसार भगवान थे हाँ-उनका स्वरूप न था । इसलीए भगवान त्रिगुणातीत थे, अर्थात अव्यक्त थे । जेसे अव्यक्त, त्रिगुणातीत बहम् की इच्छा हुई की मैं एक में से अनेक हो सकता हूँ । उसने सृष्टिके निर्माण के लिए एक प्रचंड आवाज किया । जिसे बहमनाद या नाद कहते है । यह नाद ही ऑम (ॐ) । एक मे से अनेक होने का संकल्प । यह संकल्प के समय प्रचंड आवाज हुआ वही है ऑम । इसलिए हम सभी हिन्दू जैन, बुद्ध, शीख प्रत्येक अच्छे कर्म के समय ऑम का उच्चार करके हम अपने जीवन को सृष्टि के प्रारंभ के साथ जोडते है ।

सृष्टि निर्माण के बाद मन के संकल्प से मानससृष्टि खडी हुई उसमें ऋषिमुनियों, ऋषि पत्निऔ (स्त्री, पुरुष) प्रगट कीये गये । इन सभी का जन्म था अर्थात मृत्यु भी न था । इसलिए सृष्टि आगे बढती न थी ! स्थगितता आती । प्रजापति की प्रार्थना स्वीकार करके भगवान ने पृथ्वी पर अर्धनारेश्वर का स्वरूप प्रगट किया । उससे स्थगतिता दूर हुई, यह स्वरूप वही शिव और शक्ति का ! इस शक्ति मैं से अनेक (देवीयों)शक्ति प्रगट हुई और एक देवी के साथ एक ऋषि का विवाह करवाया । वह ऋषि और ऋषि पत्नि की संतान हुई । यह संतान के लिए ऋषि ने उनका गोत्र (प्रथम, पूर्वज बने और यह देवी उनके कुल देवी बने । यह गोत्र गोत्री हुई ! गोत्र ही ब्राह्मण वैसा नही है । यह प्रथम पूर्वज अर्थात गोत्र यह सभी हिन्दुओं के प्रथम पूर्वज है (मुझे 1995 में साबरमती जेल में बडे सर्कल में रखा गया था । उसमें दो दलित समाज के और तीन क्षत्रिय थे । यह सभी के गोत्र पूछने पर मालूम हुआ की वह सभी एक ही पूर्वज के थे । अर्थात अपनी सभी जातियों के हिन्दूओ के पूर्वज एक ही है । फिर यह भेदभाव कैसे ? यह सभी पूर्वज और ऋषियों भी एक मात्र परमेश्वर में से ही प्रगट हुए थे । इसका अर्थ यह है की किसीभी जाति के हिन्दुओं एक ही परमात्मा के संतान ही है । हम सुभी की आत्मा अपने शुरुआत के जन्म से ही है । लेकीन शुरुआत के प्रथम जन्म में ही आत्मा कहाँ से आया ।

एक बात फिर से कहूँ की जब भगवान त्रिगुणातीत अव्यक्त थे तो किस रूप में थे । आज से विज्ञान के संदर्भ में कहा जाय तो एनर्जी (शक्ति) के स्वरूप में थे । भगवान एक समय अस्वरूप ऐसे ज्योतीर्मय प्रकाशपूंज-शक्तिपूंज स्वरूप में थे । उसमें से करोडों एवं अबज से अधिक ज्योति से आत्मा (शक्ति-एनर्जी)का स्वरूप लिया । एक में से अनेक होने के परब्रह्म की इच्छा के लिए ज्योति पूँज में से अनेक ज्योति ओनर्जी (आत्मा । स्वरूप)को पंचमहाभूत का देह लिया । इस तरह सभी मानवदेह में आत्मा की ज्योति पूंज अर्थात परमात्मा से आई आर्थात हम सभी एक ही परमात्मा के अंश से ही संतान है । फिर एसा भेदभाव कैसे ?

अर्थात हमारे पूर्वज एक ही है हम सभी के आत्मा ही एक जगक से आया हुआ है । आत्मा की कोई जाति लिंग नही है । ऐसी सभी प्रकार की हकीकत स्वीकार करे तो समाज में ऊँच नीच के अस्पृश्यता या ज्ञाति के आधार पर दुव्यवहार रह सकता नही या कैसे रहे ? जिस हिन्दू धर्म में सभी के पूर्वज एक ही है ऐसा कहा हो, जिस हिन्दू धर्म में ऐस कहा है कि सभी अत्मा एक परमात्मा में से आया हुआ है, वही हिन्दू धर्म के नाम पर अस्पृश्यता कैसे हो सके ?

यहाँ पर दूसरी बात यह है की हिन्दू धर्म के अनेक पुराणों में अस्पृश्यता की बात आती है वह भी सत्य है । लेकीन पुराणों ही अंतिम सत्य नही है । वेद के प्रमाण ही अंतिम सत्य है । पुराण एवं वेद के सिवाय के सभी ग्रंथो में लिखी हुई बात में सिर्फ वेद ही अंतिम प्रमाण है । वेदों में ऊँच नीच एवं अस्पृश्यता की बात कही पर नही है ।

प्रवचन के प्रमुख अनुकरणीय बिंदु :

- वेद अपने लिए अंतिम सत्य है । वेदो में कही भी अस्पृश्यता का उल्लेख नही है ।
- वेद से विपरित कोई भी बात हमे अमान्य है ।
- वर्तमान में सभी स्मृतियों (मनुस्मृति के साथ)अप्रस्तुत है । हाल में ही एक ही स्मृति बारतमें है वह भीम स्मृति अर्थात डॉ. बाबासाहब लिखित भारतीय संविधान ।
- दलितो के विरोध करने वाली एवं सामाजिक विषमत को पोषनेवाली कोई भी बात हमको मान्य नही है ।
- संविधानिक भाव से अस्पृश्यता खत्म हो चुकी है लेकीन क्या व्यवहार में अस्पृश्यता देखने को मिलती नही है ! जरुर देखने को मिलती है उसका क्या ?
- मानसिक अस्पृश्यता भी पाप ही है उन्हे दूर करना आवश्यक है ।
- सामाजिक विषमता के भोग दलित ही बने है । तब समरसता के कार्यक्रम अगड़े जाति समाज में करना ही उचित है । (अनुसंधान पान ७ पर)

संकटों का सामना करने के लिए स्वार्थों को तिलांजलि

वीर सावरकर को यह पता था कि उनके बड़े भाई श्री गणेश दामोदर सावरकर भी अण्डमान में नारकीय यातनाएं सहन कर रहे हैं, किन्तु अधिकारियों ने दोनों भाईयों को एक-दूसरे से एक क्षण के लिए भी मिलने नहीं दिया ।

एक दिन विनायक सावरकर के हृदय में अपने ज्येष्ठ भाई के दर्शनों की तीव्र लालसा उत्पन्न हुई । वीर सावरकर ने विदेश को प्रस्थान करते समय ही पूज्य भाई के दर्शन किए थे । उसके बाद दर्शन न हो सके । उन्होंने जेल कर्मियों से भी भाई से मिलाने की इच्छा व्यक्त की, किन्तु कोई भी भेंट कराने को तैयार नहीं हुआ ।

एक दिन सावरकर सायकाल के समय जैसे ही अपना पिला हुआ तेल नपवाकर वापस कोठरी की तरफ लौट रहे थे कि अचानक उनकी अपने पूज्य भाई श्री गणेश सावरकर से भेंट हो गयी । क्षण में ही दोनों की आंखे मिलीं और ज्येष्ठ भ्राता के मुख से निकल पड़ा - “तात्या तुम कैसे हो ?”

वीर सावरकर ने अपने पूज्य भ्राता के मुख से उक्त प्रेम भरे शब्द सुने तो उनकी आँखें भर आई । बारी को पता चले जाने की आशंका से वार्डन ने दोनों को बातें नहीं करने दी । दोनों भाई भारी मन से अलग-अलग कोठरियों में बन्द कर दिये गये ।

ऐतिहासिक पत्र

श्री गणेश दामोदर सावरकर ने दूसरे दिन वार्डन के हाथों एक पत्र अपने छोटे भाई के नाम भिजवाया । उसमें उन्होंने लिखा-‘‘प्रिय तात्या !! तुम बाहर रहकर मातृभूमि की स्वाधीनता के लिये कार्य करते रहोगे, ऐसी मुझे आशा थी । उस आशा के बल पर ही मैं अपने कालापानी के दण्ड को खुशी-खुशी से भोग रहा था । मन उन कष्टों को हेय मानता था । हम दोनों भाई तो जेलों में बंद कर दिये गये और केवल तुम ही बाहर रहकर मातृभूमि की आराधना में लीन हो, यही कल्पना मुझको धीरज दिया करती, कष्टों की सफलता साकार करती । मगर तुम पेरिस में कार्य करते-करते उनके हाथों न जाने कैसे पड़ गये ? अब उस क्रांति की ज्योत को कौन जलाएगा, और बाल अपना ‘बाल’ अब किसका मुंह तकेगा ? मैंने तुम्हें प्रत्यक्ष देखा है, फिर भी विश्वास नहीं होता है ! आह ! तुम यहां कैसे आये ?’’

वीर सावरकर ने अपने पूज्य भाई का पत्र पढ़ा तो उनका हृदय विदीर्ण हो उठा । बड़े भाई के हृदय के प्रत्येक तन्तु में, शरीर के प्रत्येक रोम-रोम में उन्हें राष्ट्रभक्ति की ज्योति का दिग्दर्शन हुआ । वीर सावरकर ने भी एक वार्डन के हाथों में अपने पूज्य भ्राता को निम्न पत्र भिजवाया -

‘‘लौकिक तथा भाग्योदय की आशा - आकांक्षाओं की राख शरीर में मलकर जूझते रहना यही तो अलौकिक भाग्य है । तो फिर दुःख क्यों ? यदि मैं परीक्षा में अक्षम सिद्ध होता तो मेरी योग्यता तथा कर्तव्य मिट्टी में मिल जाते । यदि ‘सीदन्ति मम गत्रणि मुखं च परिशुष्यति । गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वकचैव परिदह्यते’इस स्थिति में होकर मैं कर्तव्य विमुख हो जाता, तो किसे मुख दिखाता ? परन्तु ऐसा न होते हुए तथा प्राप्त संकटों का सामना करने के लिए स्वार्थों को तिलांजलि देकर मैं संकटों का सामना करने के लिए स्वार्थों को तिलांजलि देकर मैं स्वयं संकट झेलने के लिए तत्पर हुआ हूँ । मैंने भारतीय जनता को जो संकट से डरकर भागने लगता तो क्या मैं पथभ्रष्ट न हो जाता ? वास्तव में संकटों को झेलने में ही हम सबकी योग्यता, कर्तव्यनिष्ठा समाविष्ट है । यश-अपयश केवल संयोग की बात है । जीवनभर युद्ध करते-करते, लोदी के पुल उतरते-उतरते तथा आस्टरलीट्ज को जीतकर भी नेपालियन रोगी होकर बिछौने पर चल बसता है । इसी प्रकार स्वतंत्रता के युद्ध में रणरागिनी लक्ष्मीबाई तलवार के घाव से स्वर्ग सिधार जाती है । कोई सैनिक पहली ही मुठभेड़ में गोली का शिकार बनकर मर जाता है । उनका कर्तव्य योगायोग पर प्रायः निश्चित नहीं होता ।

मैं धर्मयुद्ध में पीछे रहकर, जिन्दा रह जाऊंऔर अन्य लोग बढ़कर युद्ध करते-करते मृत्यु को प्राप्त हो जाएं. तो फिर उस जीत का उपभोग करने के लिए मैं पीछे रह जाऊँ ? ऐसी कायर इच्छा मन में धारण न करते हुए वह सैनिक जब आवश्यकता पड़ी तब अन्यों के साथ-साथ अचलता से सैन्य के अग्र से जूझता रहा या नहीं ? इस प्रकार उसकी सच्ची योग्यता व कर्तव्यनिष्ठता की परख होती है । में समझता हूँ कि उस कसौटी पर हम सब खरे उतरे हैं । संकटों का सामना करना, कारागृह में सड़ते रहना, जिन उददेश्यों के लिए इतने कष्ट सहन किये उन्हें पूरा करते हुए मरते रहना यही सब अपने जीवन का ध्येय है । यह उतना ही महान है जितना कि बाहर रहकर कीर्ति तथा दुन्दुभियों के तल पर जूझते रहना महान माना जाता है ।

क्योंकि अन्तिम विजय प्राप्ति में ज्ञात रुप से जूझते रहना तथा दन्दुभियों की ध्वनि का निनादित होना जितना आवश्यक माना जाता है -उतनी ही कन्दराओं में, बन्दीगृहों के कहारते रहना तथा अज्ञातस्वरुप में प्राणोत्कर्ष करना महत्त्वपूर्ण माना जाता है ।

मैंने न्यायालय में दो आजन्म कारोवासों की सजा सुनते समय जो पद रचा था, वही आज उसी कठोर सजा की कराल द्रष्टाओं से पीसे जाते समय मेरे हृदय का विश्वास तथा भावना सुखासीन कर रहा है । वह महान पद है -

‘‘सारथी जिसका अभिमानी, कृष्ण और राम सेनानी ! यो कोटि-कोटि तव सेना, कभी नहीं रुकना ।’’अपने छोटे भाई के हाथों लिखा यह पत्र जब गुप्त रुप से श्री गणेश सावरकर ने पढ़ा तो वह अपने भाई की अटूट देशभक्ति एवं कर्तव्यपथ पर बलिदान होंने की महान भावना देखकर खुशी से झूम उठे ।

इस ऐतिहासिक पत्र से वीर सावरकर के हृदय की महान राष्ट्रीय भावनाओं का दिग्दर्शन होता है

सामाजिक समरसता अभियान के तहत विविध कार्यक्रम : कटनी (म.प्र.)

– रमेश शर्मा

सामाजिक समरसता अभियान के तरह सब्जी मंडी स्थित दत्त धाम शिव मंदिर में 31 अक्टूबर से भागवत कथा प्ररंभ की गई है । सुबह आठ बजे शिव रुद्रभिषेक करने के बाद कथा प्रारंभ हुई । कथा का वाचन पं. सत्यनारायण शर्मा द्वारा किया जा रहा है । अभिया के प्रांत सहमंत्री रमेश शर्माने बताया कि कथा का वाचन सुबह 9 से 11 और शाम 5.30 से 7.30 तक होगी । इसके अलावा हर रोज सुबह आठ से नै बजे तक रुद्राभिषेक का कार्यक्रम चलेगा । उन्होंने बताया कि समाजाकि समरसता लाने के लिए इसमें सभी जाति, धर्म और वर्ग के लोगों को बिना किसी भेदभाव के आमंत्रित किया गया है । संरक्षक मंडल के प्रकाश भौमिया, ऊषा शर्मा, जिला मंत्री मनीष शर्मा, डॉ.विक्रम शर्मा, संगीता शर्मा, अभिषेक शर्मा, गोपाल गुप्ता, केशव दुबे आदि इस मौके पर उपस्थित थे । उन्होंने सभी समरसता अभियान को सफल बनाने का आग्रह किया है ।

कटनी । नवरात्रि के पावन पर्व पर अखिल भारतीय सामाजिक समरसता अभियान के अंतर्गत नये बस स्टेंड के सामने देवी जागरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । जिसमें स्थानीय कलाकारों के साथ साथ नागपुर के कलाकारों द्वारा देवी भक्ति गीत गाये गये । कार्यक्रम में आसपास की हरिजन बस्ती के श्रद्धालुओं द्वारा भारी संख्या में उपस्थित होकर जागरण में हिस्सा लिया गया । नागपुर के कलाकरों के भक्ति गीत सुनकर दर्शक श्रद्धा से झूम उठे । कार्यक्रम का आयोजन अ.भा.सामाजिक समरसता के जिला उपाध्यक्ष रामफल सोनी द्वारा किया गया ।

भंडारा एवं कन्या भोज

नवरात्रि के अवसर पर मैहर जाने वाले यात्रियों की भोजन एवं फलाहार की व्यवस्था पुलिस चौकी बस स्टेंड के सामने करायी गयी । फलाहार व्यवस्था के साथ साथ ही कन्याभोज एवं विशाल भंडारा भी कराया गया जिसमें सभी जाति एवं धर्मो के लगभग 900 श्रद्धालुओं द्वारा भंडारा में प्रसाद ग्रहण किया गया ।

नौ दिन हुआ रूद्राभिषेक

बिलैया तलैया सब्जी मण्डी स्तित तमेर मंदिर में नवरात्रि के शुभ अवसर पर नै दिन रूद्राभिषेक का आयोजन सुबह 8 बजे से किया गया जिसमें सभी जाति एवं धर्म के लोगों द्वारा बिना किसी भेदभाव के हिस्सा लिया गया तथा नवमी को खिचडी एवं रायता प्रसाद का वितरण के साथ कन्या भोजन कराया गया । गटरघाटर में सर्वधर्म एकता के नाम से दुर्गा प्रतिमा की स्थापन ाकी गयी तथा दशहरा के शुभ अवसर पर शर्बत के साथ देर रात तक विसर्जन के लिये आने वाले भक्तों को हलवा प्रसाद का वितरण किया गया जिसमें समरसता के संरक्षक डी.आर.रजक एडव्होकेट का विशेष योगदान रहा ।

वाल्मिकी जयंती मनायी गयी

शरद पूर्णिमा की रात को वाल्मिकी जी की जयंती का कार्यक्रम जिला कार्यालय में आयोजित किया गया । जिसमें ऋषि वाल्मिकी जी का पूजन किया गया उनके संबंध में सबने अपने अपने विचार व्यक्त किये । कार्यक्रम में मुख्य रुप से संरक्षक मण्डल के डी.आर.रजक प्रकाश भौमिया, महिला मण्डल जिला मंत्री श्रीमती कांता भौमिया संरक्षक श्रीमती ऊषा शर्मा के साथ-साथ प्रांत सह मंत्री रमेश शर्मा जिला मंत्री मनीष शर्मा आदि की उपस्थिति रही ।

मानस पाठ एवं भजन संध्या

निटर्स, बिरूहली की मनस मण्डली द्वारा नया बस स्टेण्ड के सामने रविवार 16 अक्टूबर को सायंकाल 6 बजे से 11 बजे रामचरित मानस एवं भजन का कार्यक्रम किया गया तथा प्रसाद वितरण बाद भोजन प्रसाद का भी आयोजन किया गया जिसमें रायफल सोनी का योगदान रहा । सभी कार्यक्रमों में विशेष सेवा करने वाली बालिका कुमारी रिया भौमिया का सम्मान किया गया ।

भजन संध्या में झूमे लोग

अखिल भारतीय सामाजिक समरसता अभियान के अंतर्गत नए बस स्टैंड के सामने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. नवरात्र से शुरू हुए इन कार्यक्रमों की श्रृंखला में रविवार को शाम 6 बजे से रात 11बजे तक रामचरित मानस व भजन का कार्यक्रम आयोजनत किया गया ।

इसमें निटर्रा बिरुहली की मानस मंडली के कलाकारों ने अपने प्रस्तुति दी । उसके बाद प्रसाद वितरण व भोजन का आयोजन किया गया । इससे पहले शरद पूर्णिमा की रात को वाल्मीकि की जयंती का आयोजन जिला कार्यालय में किया गया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से संरक्षक मंडल के डीआर रजक मौजूद थे ।

सर्वधर्म एकता समिति ने रखी प्रतिमा कार्यक्रमों के तहत गाटरघाट में सर्वधर्म एकता समिति के नाम से दुर्गा प्रतिमा की भी स्थापना की गई थी । दशहरा पर प्रतिमा विसर्जन करने आने वाले लोगों के लिए शर्बत के साथ हलवा प्रसाद का भी वितरण किया गया ।

(अनुसंधान पान ८ से)

सामाजिक समरसता का अनूठा अनुभव

कि ''इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी स्वयंसेक उनके घर भोजन के लिए चलेंगे ।''

इसके बावजूद भी नन्दगढ़ को जो कार्यकर्ता दलित परिवारों से थे घरे के निकट पहुँच कर ठिठक गए उन्हें गाँव की परंपरा ध्यान आने लगी । उस समय महाशय जी ने स्वय जाकर उन्हें प्रेमपूर्वक घर के अन्दर बुलाया और सभी ने साथ बैठकर भोजन किया । भोजनोपरांत जूठे बर्तन उठाने के लिए महाशय स्वयं आगे बढ़े ।

इस विषयपर जब महाशय जी से बाद में चर्चा की तो उन्होंने कहा ''जब से संघ के सम्पर्क में आया हूँ तब से ये दलित बच्चे मुझे अपने बच्चों जैसे ही लगने लगे है ।''

आज भी जब यह घटना याद आती है तो मन भावुक हो उठता है । और यह विश्वास बढता है कि इस देश को एक करने का संघ शाखा से सशक्त अन्य माध्यम नहीं है ।

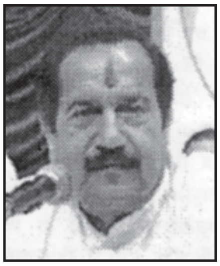

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और लोकतंत्र

– इन्द्रेश कुमार (राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य, RSS)

सत्ता ते साथ-साथ संगठनों एवं संस्थाओं के संचालन की सबसे अच्छी व्यवस्था 'लोकतंत्र' है । वर्तमान में सभी देश लोकतंत्र की ओर बढ़ रहें है । वर्तमान में भारतीय लोकतंत्र दुनिया में सबसे बड़ा व महान लोकतंत्र है । परन्तु बीच-बीच में कुछ दल और नेता लोकतंत्र को समाप्त कर तानाशाही लाने का प्रयत्न तथा षड़यंत्रों का सफलतापूर्वक विरोध करता रहा है ।

संघ संस्थापक डॉ.केशव बलिराम हेडगेवारजी ने सन् 1925 में जब संघ कार्य नागपुर में विजयादशमी के दिन शुभारम्भ किया । तब उस समय के सहयोगीयों से विचार विमर्श कर समाज में प्रचलित प्राचीन गणतंत्रीय व्यवस्था को आधार बनाकर संघ कार्य पद्धति का मौलिक स्वरुप पारिवारिक लोकतांत्रिक व्यवस्था का बनाया।

संघ कार्यपद्धति की कुछ मौलिक विशेषताऐं हैं -

1. विचार करते समय नानाविधि मत रहेंगे । दूसरे शब्दो में कहना हो तो मतभेद रहेंगे परन्तु निर्णय होने पर एकमत हो कर काम करेंगे । अपना अलग-अलग मत प्रकट नहीं करेंगे ।

2. यश और अपयश के समान उत्तरदायी होंगे । निर्णय संगठन की टोली का होना चाहिए न कि व्यक्ति या विशेष व्यक्ति समूह का ।

3. दायित्व को अधिकार न मान कर कर्तव्य मानना इसलिए तानाशाही का कोई स्कॉप न रहे और न ही दायित्व याने पद का दुरुपयोग हो ।

4. संघ में अपने संगठन के संचालन हेतु केन्द्रीय स्तर पर माननीय सरकार्यवाह । प्रान्त व जिला स्तर पर माननीय संघचालकों का चुनाव होता है । बकायदा चुनाव में भाग लेने हेतु प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात मतदाता सूचियां बना कर 4-6 मास में चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न होती है । ये चुने गए बन्धु सहयोगी अथवा समकक्ष के विचार विमर्श कर अपनी संचालन टीम का चयन कर नियुक्ति करते हैं । प्रायः 60-70 वर्ष से चुनाव उत्साहपूर्वक परन्तु सर्वसम्मति से होते आ रहे है ।

5. संघ कार्य स्वार्थ पूर्ति का नहीं बल्कि निस्वार्थ से होते हुए परमार्थ प्रेरित है । इसलिए अधिकार नहीं दायित्व मान कर कार्य करना । खर्च विहीन चुनाव पद्धति है जो कि पिछले अनेक वर्षो से सफलतापूर्वक चल रहीं है ।

6. परमार्थभाव से प्रत्येक स्वयंसेवक वर्ष में एक बार श्रीगुरुदक्षिणा के रुप में समर्पण करता है । शाखाओं के अनुसार हिसाब-किताब रखा जाता है । प्रायः हेरा-फेरी के आरोपों से मुक्त संघ का आर्थिक व्यवहार है । ऐसे सफल पारिवारिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की संघ की सफल यात्रा है ।

परन्तु दुर्भाग्य से देश में लोकतंत्र में आस्था रखने वाले दल और नेताओं के मन में समय-समय पर लोकतंत्र को नष्ट कर तानाशाही मार्ग से सदा के लिजए सत्ता पर कब्जा करने के विचार आते रहे हैं और वे इस प्रकार का प्रयत्न सन् 1975 में कोंग्रेस पार्टी से बनी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया । श्रीमती इंदिरा गांधी चुनाव हार गई थी पर उन्होंने प्रधानमंत्री पद छोड़ने के बजाय 26 जून 1975 को लोकतंत्र की हत्या करते हुए देश में आपातकाल घोषित कर तानाशाही व्यवस्था से सत्ता संचालन प्रारम्भ कर दिया । सभी राजनैतिक दलों के प्रतिबन्धित कर देश भर में स्व. जयप्रकाश नारायण सहित सभी बड़ी नेताओं को जेल में डाल दिया गया । अचानक 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर भी प्रतिबन्ध घोषित कर सैंकड़ों हजारो में संघ कार्यकर्ता भी बन्दी बना लिए गये । संघ ने कांग्रेस पार्टी एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी की तानाशाही के विरुद्ध लोकसंघर्ष समिति जो सभी दलों, तानाशाही विरोधी बुद्धिजीवीयों एवं जनता का मंच था, के माध्यम से देशव्यापी जनजागरण करते हुए जनआन्दोलन प्रारम्भ कर दिया । डेढ़ वर्ष से अधिक चलने वाले इस जनआन्दोलन को कुचलने के लिए तानाशाह सरकार ने जेल बन्दियों, सत्याग्रहीयों के परिवारों पर एवं जनता पर आत्याचार प्रारम्भ कर दिए । 65000 से अधिक संघ परिवार के बन्धु-भगिनी एवं 30-35 हजार के लगभग सभी राजनीतिक दल और समाज के प्रमुख जेल में जीवन काट रहे थे । सब प्रकार की कीमत देते हुए तानाशाही नहीं बल्कि लोकतंत्र का जयघोष गूंज रहा था । कांग्रेस पार्टी में फूट पड़ गई । अन्ततोगत्वा भारत के अन्दर एवं वैश्विक लोकतांत्रिक ताकतों के आगे तानाशाह श्रीमती इंदिरा गांधी को झुकना पड़ा । लोकसभा चुनाव में मार्च 1977 में कांग्रेस पार्टी चुनाव हार गई । श्रीमती इंदिरा गांधी को पदच्युत होना पड़ा । संघ स्वयंसेवकों सहित नानाविध दलों के राजनेता व कार्यकर्ता के कारण लोकतंत्र की पुनः बहाली हुई । कांग्रेसियों एवं कम्युनिस्टों ने तो 1975 से 1977 के बीच लोकतंत्र की हत्या करने का हरसम्भव प्रयास किया । वर्तमान लोकतंत्र तो संघ के कारण जीवित है अन्यथा कांग्रेस एवं कम्युनिस्टों ने तो लोकतंत्र का गला ही घोट दिया होता ।

स्वतंत्र भारत में सत्ताधिकारियों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर सन् 1948, 1975 एवं 1992 में अलग-अलग कारणों से प्रतिबन्ध लगा कर आर.एस.एस. को समाप्त करने का असफल परन्तु क्रूरतापूर्ण प्रयास किए । परन्तु संघ की लोकतंत्र के और अहिंसा के मार्ग पर अटूट विश्वास और श्रद्धा है और इसी श्रद्धा और विश्वास की परीक्षा इस संकट के दौरान सत्ताधारीयों ने संघ के स्वयंसेवकों, उनके परिवारों व समर्थकों को कुचलने के लिए हिंसा का मार्ग लिया तथा पत्रकारिता का गला पकड़ रखा कि वह संघ कीबात नहीं प्रकाशित करे । इतने हिंसक अत्याचारों के बावजूद तीनों प्रतिबन्धों में संघ के हजारों-हजार से आगे लाखों बन्धु जेलों में गए । विश्व में जितने भी अहिंसात्मक आन्दोलन आज तक हुए प्रायः सभी में भागीदार आज नेता व कार्यकर्ता हिंसक हो उठते हैं । परन्तु संघ स्वयंसेवकों द्वारा चलाए गए आन्दोलनों में हथियार, पत्थर तो उठना

तो बहुत दूर की बात रही बल्कि हाथ उठाने अथवा जुबान चलाने याने गाली देने तक की न्यूनतम हिंसा भी नहीं हुई । संघ द्वारा किए गए भारत एवं विश्व में इतनी लम्बी अवधि (दिन)का जिस में सर्वाधिक लोग जेल में थे सबसे बड़े अहिंसक आन्दोलन रहे । उस संघ के बारे में प्रचार करना कि संघ तानाशाह व हिंसक है यह पूर्णतया मिथ्या ही नहीं पाप और अपराध है ।

निष्पक्ष की घटना से यह अधिक स्पष्ट होता है । भगवा आतंकवाद के नाम पर विस्फोटों के राजनीतिक षड़यंत्रों में फंसी सरकार की क्रूरता के विरुद्ध संघ ने देश भर में सैंकड़ों स्थानों पर लाखों की उपस्थिति में धरने दिए । कहीं भी कोई भी दुर्घटना नहीं हुई । संघ ने लोकतांत्रिक जीवनमूल्यों को सुदृढ़ किया । संघ के पांचवे सरसंघचालक श्री सुदर्शनजी ने जब यह कहा कि सोनिया गांधी का का बर्थ एवं एजूकेशन सर्टिफिकेट बताया जावें तो कांग्रेसी हिंसक प्रदर्शनों पर दतर आये । बाबा रामदेव के अहिंसात्मक आन्दोलन और लोकतांत्रिक सत्याग्रह को कुचलने हेतु 4 जून 2011 को रात्रि 1 बजे लाठीचार्ज कर सरकार ने हिंसक तानाशाही का परिचय दिया । अभी श्री अण्णा हजारे को भी डराया धमकाया जा रहा है । भाजपा के नौजवानों को कश्मीर में तिरंगा लहराने से रोका जा रहा है ।

यह सब रोकना हो तो भारत में जनता की लोकतंत्र में जो आस्था है उसको अधिक मजबूत और सशक्त बनाना होगी । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने कार्य के माध्यम से यही भाव जगाने का एवं आस्था को मजबूत बनाने का काम कर रहा है और करता रहेगा ।

(अनुसंधान पान ३ से)

डॉ. प्रविणभाई तोगडिया प्रवचन के अंश

- दलित अत्याचार के समय अगड़े जाति कार्यकर्ता को सक्रिय बनना चाहिए ।
- अस्पृश्यता के सामने विराट अभियान शुरु करना चाहिए ।
- ज्ञाति के मिलन के समय अस्पृश्ता के खंडन की प्रतिज्ञा और समरस समाज के निर्माण की संकल्पना लेनी चाहिए ।
- सामाजिक विषतमता के भोग बनने वाले दलित कहीं भी राष्ट्र विरोध खिस्ती मिशनरी के परिबल के सामने घुटने न टेके उनके लीए हमे सावधान बनना चाहिए
- शिक्षा एक सामाजिक विकास का शस्त्र है । अतः दलितो में शिक्षा व्यापक अभियान चलाना चाहिए ।
- दलितों में निशुल्क ट्यूशन क्लास, पर्सनल कोचिंग छात्रालय, निर्बल एवं तेजस्वी छात्रो को सहाय, मुट्ठी धान्य योजना ईत्यादी सेवाकीय प्रकल्पो चलाने चाहिए ।
- समरसता के सर्जन के लिए संकल्प करना चाहिए ।
- कोई भी हिन्दु भोजन से वंचित न रहे ।
- कोई भी हिन्दु औषध से वंचित न रहे ।

(सामाजिक समरसता अभियान गुजरात की बैठक में मा.डॉ.प्रवीणभाई तोगडीया ने दिए हुए अपने भाषण के कुछ अंशो से)

सौजन्य सह

रासायणिक खाद, जंतुनाशक दवाई, बिज और खेत औजारो के अधिकृत कंपनीओं के सरकार मान्य अधिकृत विक्रेता....

ऍग्री बिझनेस सेन्टर

गुजरात एग्रो इन्डस्ट्रीझ कोर्पो. लीमीटेड द्वारा मान्य

श्री सुरेशभाई शंकरभाई पटेल

28, सरदार बाग शोपींग सेन्टर, अेस. टी. रोड, विरमगाम, जिला - अमदावाद.

मोबाईल : 9825234563 • ऑफिस : 079-232563, निवास : 079-231363

सामाजिक परिवर्तन
सामाजिक समरसता का अनूठा अनुभव

– सुशील कुमार गर्ग, गुड़गांव

हरियाणा के जगाधारी जिले में एक छोटा सा गांव है नन्दगढ़ा । वहाँ शाखा प्रारम्भ हुई । गाँव के जमीदार गुर्जर जाति के है । शाखा में सभी जातियों के स्वयंसेवक आने लगे । संयोग से मुख्य शिक्षक व गणशिक्षक दलित परिवारों के थे ।

घटना उस समय की है जब गाँव की परम्परा ऐसी थी कि यदि किसी जमींदार के घरमें किसी प्रसंग पर प्रीतिभोज का आयोजन होता था तो दलित परिवारों के लोग पंगत में बैठकर भोजन नहीं कर सकते थे । वे अपने बर्तन घर से लाते थे और भोजन ले जाते थे या गलियों में बैठकर खाते थे ।

उसी गाँव में खण्ड(10-12 गांवो का समूह) के स्वयंसेवकों का नैष्पुन्य वर्ग रखा गया जिसमें 40 के लगभग स्वयंसेवकों ने भाग लेना था । हमने परंपरा यह बना रखी थी कि जिस गाँव में नैपुण्य वर्ग रखा जाता था उस गाँव के स्वयंसेवक बाहर से आने वाले स्वयंसेवकों के लिए भोजन अपने घरों से बनवा लागे थे और सब मिलकर भोजन कर लेते थे ।

महाशय रामशरण जी नन्दगढ़ गाँव के बड़े जमीदार थे जिनके परिवार को अंग्रेजों के समय से जेलदार का पद मिला हुआ था । मेरा उनसे अच्छा परिचय हो गया था संघ के एक जिला सम्मेलन में उनको अध्यक्ष भी बनाया था उसके बाद वे हमारे बड़े कार्यक्रमों को देखने आते थे ।

नन्दगढ़ गाँव में जब नैपुण्य वर्ग का कार्यक्रम निश्चित किया गया तो मैंने वहाँ के कार्यकर्ताओं को कहा कि महाशय जी को भी कार्यक्रम की जानकारी दे देना । उस कार्यक्रम में हमारे विभाग संघचालक चौधरी सत्यदेव सिंह जी (रिटायर्ड आई.पी.एस.)भी आने वाले थे ।

मुख्य शिक्षक ने मुझसे पूछा कि ''महाशय जी यदि भोजन व्यवस्ता के बारे में पूछे तो हम क्या कहें ?'' मैंने उन्हें कहा कि ''बता देना हम लोग अपने-अफने घरों से ले आते हैं सब मिलकर खा लेते हैं ।'' कार्यकर्ता ने फिर पूछा कि ''यदि महाशय जी अपने घर भोजन खाने का आग्रह करें तो ?'' मैंने कहा हाँ कर देना, मना मत करना ।

सभी का भोजन महाशय जी के घर निश्चित हो गया । महाशय जी कार्यक्रम में भी उपस्थित रहे ।

गाँव के दलित परिवारों के साथ छूआछूत की परंपरा को ध्यान में रख कर मैं आशंकित था कि हमारे दलित कार्यकर्ताओं को कहीं अलग बैठकर भोजन के लिए न कह दें ?

इसी आशंका के कारण मैंने कार्यक्रम के अन्त में सूचना दी कि ''अन्य गाँव से आए स्वयंसेवकों के लिए भोजन का प्रबन्ध है । भोजन के लिए महाशय जी के घर चलेंगे ।''

मेरे को सुखद आश्चर्य हुआ जब महाशय जी ने स्वयं सूचना दहेराई

(अनुसंधान पान ५ पर)

नोंध : 'समरसता सेतु' मासिक में प्रकाशित लेख और व्यक्त किये गये विचार संबंधित लेखको के है । संपादक, तंत्री उसके साथ सहमत है ऐसा आवश्यक नही हैं । सभी कानूनी विवाद प्रकाशन के ३ माह में अमदावाद न्यायलय क्षेत्रमें किये जा सकते हैं ।

शुभेच्छा संदेश

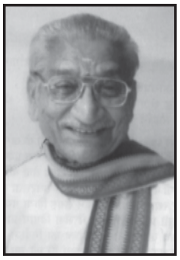

वि.हि.प/8/11
मार्गशीर्ष कृ द्वितीया वि.सं.2068
12 नवम्बर, 2011

सादर नमस्कार ।

आपने 'समरसता सेतु' हिन्दी में भी अलग से निकाला है, यह बड़े साहस का कार्य किया है । दीपावली विशेषांक देखने को मिला है । पत्रिका यदि प्रत्येक कार्यकर्ता के हाथ में पहुँचती है और उसे यदि वह ध्यान से पढ़ता है तो समरसता के इस विराट कार्य को करने के लिए बल मिलता है, मार्गदर्शन होता है ।

धन्यवाद एवं शुभकामनाओं सहित,

आपका

अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष - विहिप

हंसालय 12वाँ माला,
15 बाराखम्भा रोड,
नयी दिल्ली 110 001
18 फरवरी 2010

प्रिय श्रीदेवजी,

सप्रेम जय श्रीराम ।

श्रीयुत् विष्णुहरिजी डालमिया के नाम आपका पत्र "समरसता सेतु" पत्रिका के प्रकाशन के संबंध में प्राप्त हुआ । श्रीडालमियाजी ने इस पत्र का अवलोकन कर दिया है । श्रीडालमियाजी का मत है कि आपके द्वारा प्रारम्भ किया जा रहा यह कार्य वास्तव में सराहनीय एवं प्रशंसनीय है, जिसके लिए श्रीडालमियाजी आपको हार्दिक साधुवाद देते हैं ।

बढ़ती आयु के कारण श्रीडालमियाजी का स्वास्थ्य आजकल शिथिल रहता है, जिस कारण वे बहुत समय से कार्यालय भी नहीं आ रहे हैं । अतएव उक्त पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपना कोई लेख लिखने में श्रीडालमियाजी असमर्थ है ।

पत्रिका अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करे - भगवान श्रीराम के श्रीचरणों में श्रीडालमियाजी की यही विनीत प्रार्थना है ।

पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका,

के. आर. अनन्त नारायणन
निजी सचिव - श्रीयुत् विष्णुहरि डालमिया

प्रति श्री,